بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله واصحابه اجمعين الى يوم الدين

Research Paper 8

12 ربیع الاول 1434ھ

25 January 2013

मुक़म्मल नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ (सहिहुल असनाद अहादीस की रौशनी में)

[.........وَصَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي......... صحیح بُخاری :631]

[और नमाज़ उसी तरह पढ़ों जिस तरह मुझें (मुहम्मद ﷺ) को पढ़ते देखते हो]

मेरे मुसलमान भाईयों ! शैतानी वसवसों के बावजूद अपनी मौत से पहलें पहलें सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!

اللہ ﷻ के महबूब,हमारें निहायत ही शफीक़ आक़ा, इमामे आज़म, इमामे काइनात सय्यिदुल अव्वलीन वल आखिरीन, इमामु व खातमुल अंबिया वल मुर्सलीन, शफ़िउल मुज्नबीन, रहमतुल लिल आलमीन,**सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलल्लाह ﷺ** की मुक़म्मल नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ "तकबीर तहरिमा से लेकर सलाम तक" सही हालत में कुतुब-ए-अहादीस में महफ़ूज़ और हमारे अमल के लिए बिलकुल आसान है

नोट: ये तहरीर सिर्फ़ उन्ही कुतुब से "तकरीबन 140 सहिउल असनाद अहादीस की रौशनी में" है जिनके मुस्तनद होने पर बर्रे सगीर पाक व हिन्द में "अहलेसुन्नत का दावाह करने वाले" तीनों मसलक:1.बरेलवी 2.देओबंदी 3.सलफीं (अहले हदीस) न सिर्फ़ मुत्तफ़िक़ हैं बल्कि इन कुतुब की हर मसलक की अलग अलग उर्दू ज़बान में तराज़िम भी बाज़ार में बा आसानी दस्तियाब हैं .

नोट: इस अहम् तहरीर में **मुर्शिद-ए-कामिल, इमाम उल अंबियां वल्मुर्सलीन** ﷺ की तमाम सहीह उल असनाद अहादीस के नम्बर्स उलेमाएं हरमैन और बैरुत की इंटरनेशनल नंबरिंग के ऐन मुताबिक है.

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "वाहिद सुन्नत तरीका" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

I तर्जुमा सहीह हदीस: अबु सलेमह बिन अब्दुर्रेहमन ताबी رحمہ اللہ का बयान है की सय्यिद्ना अबु हुर्रैराह तमाम नमाज़ो में तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहा करते थें ख्वा फ़र्ज़ हो या नफिल, रमज़ान का महीना हो या कोई और महीना. चुनाँचे जब आप ﷺ नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीर कहते,फिर रकूअ में जाते तो तकबीर कहतें, फिर रकूअ से सर उठाते तो कहते, سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ، رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ फिर सज्दे के लिए झुकते तो तकबीर कहते,फिर सज्दे से सर उठाते तो तकबीर कहते,फिर दूसरे सज्दे में जाते तो तकबीर कहते,फिर दूसरे सज्दे से सर उठाते तो तकबीर कहते,फिर दूसरी रकाआत के बाद वाले तशाहुद से उठते तो तकबीर कहते, फिर आप तमाम रकाअतो में इसी तरह तकबीर कहतें यहाँ तक की आप नमाज़ से फारिग़ हो जाते.फ़िर नमाज़ से फारिग़ होने के बाद फ़रमाते: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है मैं तुम सब से ज़्यादा रसूलल्लाह ﷺ की नमाज़ से मुताबक़त रखता हूँ. आप ﷺ इसी तरह नमाज़ पढ़ते रहे यहाँ तक की दुनिया से तशरीफ़ ले गये".

नोट: ये हदीस "तकबीरात का बयान" वाले ब़ाब में है, इसलिए इसमें पहली तकबीर के साथ भी हाथ उठाने का ज़िक्र नहीं है.
[صحیح بُخاری : 803 ، صحیح مُسلم : 867]

नोट: बनु उमय्याह के शरीर गवर्नरों ने जब बुलंद तकबीर कहने की सुन्नत छोड़ दी तो सय्यिद्ना अबु हुर्रैराह ؓ ने हदीस पर क़सम खाई.
[صحیح بُخاری : 784 تا 789، صحیح مُسلم : 867 تا 873]

II तर्जुमा सहीह हदीस: दूसरे खलीफ़ा सय्यिद्ना उमर फारुख ؓ के पोतें सालिम बिन अब्दुल्लाह ताबीह رحمہ اللہ अपने वालिद सय्यिद्ना अब्दुल्लाह बिन उमर का बयान नक़ल फ़रमाते हैं "मैंने देखा कि रसूलल्लाह ﷺ जब नमाज़ शुरू फ़रमाते तो तकबीर (अल्लाहु अक्बर) कहते और अपने दोनों हाथ कन्धों तक उठातें (यानि रफ़ुल्यादैन करते). और जब रकूअ के लिए तकबीर कहतें तो यही (रफ़ुल्यादैन का) अमल करते और जब रकूअ से सर उठातें तो भी यही (रफ़ुल्यादैन का) अमल करते और سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ ، رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ कहते थें.और सज्दों में (रफ़ुल्यादैन का) ये अमल नहीं करते थें."
[صحیح بُخاری : 735 ، صحیح مُسلم : 861 ، جامع ترمذی : 255 اور 256 ، سُنن ابی داؤد : 722 ، سُنن نسائی : 879 ، سُنن ابن ماجه : 858]

नोट: इमाम अबु ईसा तिर्मिज़ी رحمہ اللہ (अल मुतावफ्फा-279ھ) लिखते है: "हदीसी इब्ने उमर ؓ "हसन सहीह" है........और (इमाम अबु हनीफ़ा رحمہ اللہ के शागिर्द) इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمہ اللہ का कौल है की जो शक्स नमाज़ में हाथ उठाता (रफ़ुल्यादैन करता)है तो उसकी (ऊपर बयान की गई) हदीस-ए-इब्ने उमर ؓ साबित है जिसे जुहरी ने बवास्ता सालिम उन के वालिद (सय्यिद्ना इब्ने उमर) से रिवायत किया.और सय्यिद्ना इब्ने मसूद ؓ की वो हदीस (جامع ترمذی:257) साबित ही नहीं है कि नब्बी ﷺ नमाज़ के आग़ाज़ में ही हाथ उठाते थे."
[جامع ترمذی : حدیث 256 کے تحت]

नोट: इमाम अबु दाऊद رحمہ اللہ (المُتوفی-275ھ) ने भी सय्यिद्ना इब्ने मसूद ؓ की इसी हदीस पे लिखा : "ये हदीस इन अलफ़ाज़ के साथ सहीह नहीं."
[سُنن ابی داؤد : حدیث 748 کے تحت]

नोट: सय्यिद्ना इब्ने उमर ؓ जिस शक्स को देखतें कि वो(सुस्ती की वज़ह से)रकूअ से पहले और रकूअ के बाद "रफ़ुल्यादैन" नहीं करता तो उसे कंकरियां मारा करते थे.
[جُز رفعُ الیدین : 15]

III तर्जुमा सहीह हदीस: चौथे खलीफ़ा सय्यिद्ना मौला (महबूब) अली अल मुर्तज़ा ؓ बयान फ़रमाते हैं. "रसूलल्लाह ﷺ जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीर कहकर अपने दोनों हाथ कन्धों तक उठातें (यानि रफ़ुल्यादैन करते)और किरआत खत्म करके रकूअ में जाते हुए भी यही अमल करते और जब रकूअ से उठ कर भी यही अमल करते. मगर बैठने की हालत (जल्सा व तशहुद) में ये अमल नहीं करते थे. और जब सज्दे में (दो रकाआत)पढ़ कर खड़े होते तो इसी तरह अपने हाथों को बुलंद करते और तकबीर कहते थे.
[جامع ترمذی : 3423 ، سُنن ابن ماجه : 864]

नोट: सज्दों में "रफ़ुल्यादैन" करने वाली हदीस की सनद क़तादाह की तद्लीस की वजह से ज़ईफ़ है, अलबत्ता सय्यिदना अनस ؓ से ये अमल से साबित है लिहाज़ा बिदअत नहीं.
[جُز رفعُ الیدین : 105]

IV तर्जुमा सहीह हदीस: मुहम्मद बिन उमर व ताबी رحمہ اللہ का बयान है."मैंने सय्यिद्ना अबु हमीद अल साअदी ؓ को 10 सहाबा किराम ؓ

② के दरमियान, जिनमें अबु क़तादाह ؓ भी थें, कहते हुए सुना कि मैं रसूलल्लाह ﷺ की नमाज़ के बारे में तुम सब से ज़्यादा जानता हूँ.उन्होंने कहा अच्छा बयान करो! फिर सय्यिद्ना अबु हमीद ؓ ने बयान किया: रसूलल्लाह ﷺ जब भी नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ कन्धों के बराबर उठातें, फिर तकबीर कहते, फिर क़िरआत करते, फिर तकबीर कहकर हाथ कन्धों के बराबर उठातें, फिर रकूअ करते और अपनी हथेलियाँ घुटनों पर रख देते गोया की उन्हें पकड़ा हो, हाथों को कमान की तरह तान कर पहलुओं से दूर रखते क़मर सीधी करते न तो सर को झुकाते और न ही बुलंद करते, फिर सर उठातें سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه कहकर अपने हाथों को कन्धों के बराबर उठातें और इत्मिनान के साथ सीधे खड़े हो जाते, फिर तकबीर कहकर ज़मीन की तरफ झुकते, सज्दे में नाक़ और पेशानी को ज़मीन पर रखते, अपने हाथों को पहलुओं से दूर रखते, हथेलियों को कन्धों के बराबर रखते और रानों को पेट के साथ न लगने देते, पांव की उंगिलयां (क़िबला की तरफ) खोलतें, फिर सर उठातें, बाएँ पांव को मोड़ते और उसी पर बैठ जाते और इस क़दर इत्मिनान से (जल्से में) बैठते की हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाती, फिर सज्दे करते, फिर तकबीर कहकर उठतें, बायाँ पांव मोड़कर इस पर बैठते और इस क़दर इत्मिनान से (जल्से इस्तराहत में) बैठें रहतें की हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाती, फिर खड़े होते और दूसरी रकआत इसी तरह मुक़म्मल फ़रमाते, फिर जब दूसरी रकआत के बाद खड़े होते तो तकबीर कहकर अपने दोनों हाथ कन्धों के बराबर उठातें जैसा की नमाज़ के शुरू करते वक़्त किया था,फिर आप ﷺ अपनी बाकी नमाज़ में भी ऐसा ही करते हत्ता की जब आखरी सज्दा होता के जिसके बाद सलाम फेरना होता तो आप ﷺ **तवर्रुक** करते (यानि अपने बाएँ पांव को अपने दाएँ पांव के नीचें से बहार निकाल कर बाएँ सिरे (कूलेह) पर बैठ जाते, और दाएँ पांव के पंजें को क़िबला रुख कर लेते), दाएँ हाथ को दाएँ घुटनें और बाएँ हाथ को बाएँ घुटनें पर रखते और शहादत की ऊँगली से इशारा फ़रमाते, और फिर सलाम फेरते थे. उन सब(10 सहाबा किराम ؓ) ने कहा तुमने बिल्कुल सच बताया, आप ﷺ इस तरह नमाज़ पढ़ा करते थे."

नोट: इमाम अबु ईसा तिरमिज़ी رحمہ اللہ लिखते है:"ये हदीस "हसन सहीह" है" [جامع ترمذی : 304 ، سُنن ابی داؤد : 730اور734، سُنن ابن ماجه : 1061]

नोट: "कीमिया ए सआदत" में इमाम मुहम्मद गज़ाली رحمہ اللہ (المتوفی-505ھ) ने और "गुनियतुल तालबीन" में शेख अब्दुल कादिर ज़िलानी رحمہ اللہ (المتوفی-561ھ) ने भी नमाज़ का यही तरीका लिखा है.

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत कियाम" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

❶ रसूलल्लाह ﷺ अपनी नमाज़ तकबीर अल्लाहु अक्बर कहकर शुरू फ़रमाते और दोनों हाथ कन्धों तक उठातें(यानि रफ़ुल्यादैन करते).
[صحيح بُخاری : 735 ، صحيح مُسلم : 861]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ का नमाज़ के इब्तिदा में हाथों से कानों का पकड़ना या छूना साबित नहीं. मगर कानों के बराबर हाथ उठाना(यानि रफ़ुल्यादैन करना) ज़रूर साबित है.
[صحيح مُسلم : 865]

❷ रसूलल्लाह ﷺ के मुबारक ज़माने में (आप ﷺ की तरफ से) लोगों को इस बात का हुक्म दिया जाता था कि वो (कियाम) नमाज़ में दायाँ हाथ बाएँ ज़िराआ पर रखे. और खुद आप ﷺ भी नमाज़ में अपना दायाँ हाथ अपनी बाएँ हथेली, कलाई, और साआद पर रखा करते थे.
[صحيح بُخاری : 740 ، الموطاء لِلمالک : 377 ، 159/1 ، صحيح مُسلم : 896 ، سُنن نسائی : 890]

नोट: कोहनी के सिरे से दर्मियानी ऊँगली के सिरे का हिस्सा "ज़िराआ" और कोहनी से हथेली तक का हिस्सा "साआद" कहलाता है.
[عربی ڈکشنری القاموس : صفحه نمبر 568 اور 769]

नोट: दाएँ हाथ को, बाएँ हाथ की पूरी ज़िराआ (हथेली,कलाई और हथेली से कोहनी तक) पर रखा जाये तो खुद बख़ुद नाफ़ से ऊपर "सीने के दर्मियानी हिस्से" तक आ जाता है और यही बात सहीह हदीस से साबित है,चुनाँचे सय्यिदना हालिब ताई ؓ बयान करते है की रसूलल्लाह ﷺ अपना दायाँ हाथ अपने बाएँ हाथ पर, सीने पर रखा करते थे.
[مُسند احمد : 22017 ، 226/5]

नोट: नाफ़ से नीचे हाथ बाँधने वाली हदीस की सनद में अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ अल कूफ़ी को खुद इमाम दाऊद ؓ ने ज़ईफ़ लिखा और उसकी तमाम शवाहिद भी ज़ईफ़ है
[سُنن ابی داؤد : 756]

नोट: कयाम में "हाथ छोड़ने" वाली हदीस की सनद में ख़सीद बिन ज़ेहरीर झूठा रआवी है, अलबत्ता सय्यिद्ना इब्ने ज़ुबैर ؓ से ये अमल साबित है लिहाज़ा बिदअत नहीं.
[المُصنف لابن ابی شيبة : 3950]

❸ रसूलल्लाह ﷺ तकबीर के बाद ये दुआ पढने का हुक्म फ़रमाते: سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَىٰ جَدُّكَ وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ ﴿ऐ اللہ ﷻ तू पाक़ है और तेरी तारीफ़ के साथ, तेरा नाम बरकतों वाला और तेरी शान बुलंद है तेरे सिवा कोई और मअबूद नहीं.﴾
[صحيح مُسلم : 892 ، جامع ترمذی : 242 ، سُنن نسائی : 1137]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ से साबित ये दुआ भी पढ़ सकते है:.. اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ [صحيح بُخاری : 744 ، صحيح مُسلم : 1354]

❹ रसूलल्लाह ﷺ सना पढ़ने के बाद ये दुआ पढ़ते थे:.. أَعُوذُ بِاللّٰهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ ﴿اللہ ﷻ समीअ अलीम की पनाह माँगता हूँ मैं शैतान मरदूद के वस्वसो(दिलाने)से, और तकबीर(पे अमादा करने)से,और फूँकों (के ज़रीए जादू कर देने) से.)﴾
[سُنن ابی داؤد : 775]

नोट: सिर्फ़ इतनी दुआ पढ़ लेना भी बिल्कुल सहीह है. أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ [صحيح بُخاری : 6115 ، صحيح مُسلم : 6646]

❺ रसूलल्लाह ﷺ इसके बाद ये दुआ पढ़ते थे بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ﴿اللہ ﷻ के नाम के साथ (शुरू) जो रहमान और रहीम है﴾
[سُنن نسائی : 906]

नोट: कसरत-ए-दलाईल की रु से राजहे कौल यही है की रसूलल्लाह ﷺ अमुमन بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ सिरअन (यानि आहिस्ता आवाज़ में)ही पढ़ते थे
[صحيح مُسلم : 890]

❻ रसूलल्लाह ﷺ इसके बाद "سورۃ الفاتحۃ" की तिलावत फ़रमाया करते थे. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ ﴿اللہ ﷻ रब्बिल आलमीन के लिए सब हम्द व सना है, जो रहमान व रहीम है, यौम-ए-जज़ा का मालिक है,(ए اللہ ﷻ)हम तेरी ही इबादत करते है और तुझी से मदद माँगते है, दिखा हमें सीधा रास्ता,रास्ता उन लोगों का जिन पर तूने इनाम किया, न की उन लोगों का रास्ता जिन पर गज़ब किया गया और जो गुमराह है.﴾
[صحيح بُخاری : 743 ، صحيح مُسلم : 892]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ "سورۃ الفاتحۃ" ठहर ठहर कर(यानि थोड़े वक्फे से अलग अलग)पढ़ते थे, और हर आयत पर वक्फा भी फ़रमाया करते थे.
[مُسند احمد : 26513 ، 288/6]

3 **नोट:** रसूलल्लाह ﷺ ताकीदन इर्शाद फ़रमाते:जो शक्स "सुरातुल फातिहा" नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ नहीं होती" मजीद ये भी फ़रमाते: "इमाम के पीछें क़िराआत मत किया करों सिवाए "सुरातुल फातिहा" के क्यूँकि जो "सुरातुल फातिहा" नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ ही नहीं होती: [صحیح بُخاری : 756 ، صحیح مُسلم : 874 ، جامع ترمذی : 311 ، سُنن ابی داؤد : 823 اور 824]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ के सहाबी सय्यिद्ना अबु हुरैराह ؓ नमाज़े बा जमाआत में इमाम के पीछें मुक्तदी को भी आहिस्ता आवाज़ में सिर्फ़ "सुरातुल फातिहा" पढ़ने का हुक़ुम दिया करते. [صحیح مُسلم : 878]

7 रसूलल्लाह ﷺ "सुरातुल फातिहा" के बाद जाहरन (ऊँची क़िराआत वाली) नमाज़ में "आमीन" भी ऊँची आवाज़ से कहते थे. [سُنن ابی داؤد : 932 اور 933 ، سُنن نسائی : 880]

नोट: ज़हरी नमाज़ में सिरअन (आहिस्ता) "आमीन" कहने की हदीस के इज़्तराब को इमाम तिरमिज़ी رحمہ اللہ ने खूब वाज़ह फरमा कर "आमीन" जाहरन(ऊँची) कहने को राजहे कहा. [جامع ترمذی : 248]

नोट: सिरअन(आहिस्ता आवाज़ वाली)नमाज़ों में "आमीन" सिरअन(आहिस्ता) कहने का तमाम मुसलमानों का इजमाअ है, और इजमाअ हुज्जत है. [النساء : 115] ، [المُستدرک لِلحاکم : 399]

8 रसूलल्लाह ﷺ सूरत से पहले ये दुआ पढ़ते: بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴾ﷲ ﷻ के नाम के साथ (शुरू) जो रहमान और रहीम है﴿ [صحیح مُسلم : 894]

9 रसूलल्लाह ﷺ पहली दो रकआतों में सुरातुल फातिहा के साथ और सूरत भी या क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ते थे. [صحیح بُخاری : 762 ، صحیح مُسلم : 1013 ، سُنن ابی داؤد : 859]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ आखरी दो रकाआतों में सिर्फ़ सुरातुल फातिहा पढ़ते और कभी कभी साथ कोई सूरत भी मिला लेते थे. [صحیح بُخاری : 776 ، صحیح مُسلم : 1013اور 1014]

10 रसूलल्लाह ﷺ क़िराआत के बाद रकूअ से पहले "सक्ता" (यानि कुछ देर तक के लिए वक्फा) भी फ़रमाया करते थे. [سُنن ابی داؤد : 777 اور 778 ، سُنن ابن ماجه : 845]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत रकूअ" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

11 रसूलल्लाह ﷺ रकूअ के लिए तकबीर कहते तो दोनों हाथ कन्धों तक और कभी कानों तक उठातें, अपने हाथों से घुट्नों को मज़बूती से पकड़ते, अपनी क़मर झुकाते न तो सर मुबारक पेट् से ऊँचा होता और न नीचा, बल्कि पेट् की सीध में बिल्कुल बराबर होता, और दोनों हाथ अपने पहलुओं से दूर होते थें. [صحیح بُخاری : 735 اور 828 ، صحیح مُسلم :865 ، سُنن ابی داؤد : 734]

12 रसूलल्लाह ﷺ से रकूअ में दर्ज ज़ैल दुआएँ साबित है, लिहाज़ा इनमें से कोई एक दुआ कमज़ कम 3 मर्तबा या तमाम ही पढ़ ले. [المُصنف لابن ابی شیبۃ : 2571 ، 225/1]

I रसूलल्लाह ﷺ ये दुआ पढ़ने का हुक़ुम देते: سُبۡحَانَ رَبِّيَ الۡعَظِيۡمِ ﴾पाक है मेरा रब्ब अज़ीम﴿ [صحیح مُسلم : 1814 ، سُنن ابی داؤد : 869 ، سُنن ابن ماجه : 887]

II रसूलल्लाह ﷺ अपने रकूअ और सज्दों, दोनों में ही ये दुआ कसरत से पढ़ा करते थे: سُبۡحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمۡدِكَ، اَللّٰهُمَّ اغۡفِرۡلِيۡ ﴾اے اللہ ﷻ! ऐ रब्ब हमारें! तू पाक़ है, और तेरी हम्द के साथ, اے اللہ ﷻ! मेरी मगफिरत फरमा दे.﴿ [صحیح بُخاری : 794 ، صحیح مُسلم : 1085]

III سُبُّوۡحٌ قُدُّوۡسٌ رَبُّ الۡمَلَآئِكَةِ وَالرُّوۡحِ ﴾हर बुराई से बिल्कुल पाक, तमाम नकाईस से बिल्कुल पाक और, मलायका और रूह का रब्ब﴿ [صحیح مُسلم : 1091]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत कौमाह" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

13 रसूलल्लाह ﷺ रकूअ से सर मुबारक उठाते तो दोनों हाथ कन्धों तक और कभी कानों तक उठातें और ये दुआ पढ़ते. سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنۡ حَمِدَهٗ، رَبَّنَا وَلَكَ الۡحَمۡدُ ﴾ﷲ ﷻ ने सुन ली उसकी(फ़र्याद)जिस ने(भी)उसकी हम्द बयान की, ऐ रब्ब हमारें! और हम्द तेरे ही लिए हैं.﴿ [صحیح بُخاری : 735 ، صحیح مُسلم : 861 اور 865]

नोट: अफ्ज़ल यही है कि मुक्तदी भी नमाज़ में इमाम के पीछें ये दुआ पूरी ही पढ़े سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنۡ حَمِدَهٗ، رَبَّنَا وَلَكَ الۡحَمۡدُ [المُصنف لابن ابی شیبۃ : 2600 ، 227/1]

14 रसूलल्लाह ﷺ के पीछें एक आदमी ने पढ़ा: رَبَّنَا وَلَكَ الۡحَمۡدُ حَمۡدًا كَثِيۡرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيۡهِ ﴾ऐ रब्ब हमारें ! और हम्द तेरे लिए, हम्द बहुत ज़्यादा पाक़ व मुबारक.)इस पर रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने 30 से ज़्यादा फ़रिशतों को इसका सवाब लिखने में जल्दी करते और एक दूसरे पे सब्क़त लेते हुए देखा है﴿ [صحیح بُخاری : 799]

15 कौमाह में हाथ सीधे छोड़ने पर उम्मत का अम्ली तवातर और इजमाअ है, बल्कि अरकान-ए-नमाज़ में हाथों की सुन्नत हालत बताने वाली हदीस में भी इसका इशारा मिलता है. [سُنن نسائی : 890]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत सज्दा" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

16 रसूलल्लाह ﷺ तकबीर कहते हुए सज्दे के लिए झुकते तो आप ﷺ फ़रमाते मुझे सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुक़ुम दिया गया है, पेशानी नाक़, दो हाथ, दो घुटनें, और दो पांव मजीद फ़रमाया के जब तुम सज्दा करों तो ऊँट की तरह न बैठो(बल्कि) अपने दोनों हाथों को घुटनों से पहले ज़मीन पर रखों: [صحیح بُخاری : 803 اور 812، صحیح مُسلم : 868 ، سُنن ابی داؤد : 840]

नोट: सज्दे में जाते वक़्त पहले घुटनें और फिर हाथ रखने वाली हदीस की सनद शरीक़ बिन अब्दुल्लाह क़ाज़ी की तद्लीस की वज़ह से ज़ईफ़ और उसकी तमाम शवाहिद भी ज़ईफ़ है: [سُنن ابی داؤد : 838]

17 रसूलल्लाह ﷺ सज्दे में नाक़ और पेशानी, ज़मीन पर (खूब) जमा कर रखते, अपने बाज़ुओं को अपने पहलुओं से दूर रखते और दोनों हथेलियाँ कन्धों के बराबर(ज़मीन)पर रखते. और कभी अपनी दोनों हथेलियों को अपने कानों के बराबर रखते, और सज्दे में अपने हाथ (ज़मीन पर) रखते तो न तो उन्हें बिछाते और न(बहुत) समेटते, और आप ﷺ अपनी पांव की ऊँगलियों को क़िबला रुख रखते और पांव की दोनों एड़ियाँ मिला लेते थे.

[صحیح بُخاری : 828 ، صحیح مُسلم : 1105 ، سُنن ابی داؤد : 730 اور 734 ، سُنن نسائی : 890 ، صحیح ابنِ خُزیمه : 654]

18 रसूलल्लाह ﷺ हुक़ुम फ़रमाते "सज्दें में ऐतादाल करों, कुत्ते की तरह बाज़ू न बिछाओ, अपनी हथेलियाँ ज़मीन पर रखों और कोह्नियाँ उठा लों." [صحیح بُخاری : 822 ، صحیح مُسلم : 1104]

नोट: इस सहीह हदीस के वाजेह हुक़ुम के तेहत औरतें भी सज्दों में बाज़ू न बिछाएँ. मजीद ये की मर्दों और औरतों की नमाज़ के

तरीक़े में कोई फ़र्क नहीं हैं. और इस ज़िम्न में जितनी भी रिवायत पेश की जाती है वो सब की सब ज़ईफ़ है जबकि सही हदीस में वाजेह हुकुम है "नमाज़ उसी तरह पढ़ों जिस तरह मुझें (मुहम्मद ﷺ) को पढ़ते हुए देखते हो. [صحيح بُخارى : 631]

⑲ रसूलल्लाह ﷺ से सज्दों में दर्ज ज़ैल दुआएँ साबित है. लिहाज़ा इनमें से कोई एक दुआ कमज़ कम 3 मर्तबा या तमाम ही पढ़ ले. [المُصنف لابن ابى شيبة : 2571 ، 225/1]

I रसूलल्लाह ﷺ ये दुआ पढने का हुकुम देते: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى ﴿पाक है मेरा रब्बी आला﴾ [صحيح مُسلم : 1814 ، سُنن ابى داوٗد : 869 ، سُنن ابن ماجه : 887]

II سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ III سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَآئِكَةِ وَالرُّوْحِ

[इन दुआओं का हवाला और तर्जुमा "सहीह रकूअ" वाले हिस्से में देख ले]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत जल्सा" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

⑳ रसूलल्लाह ﷺ तकबीर कहकर सज्दे से सर मुबारक उठाते और (जल्से में) अपना बायाँ पांव बिछाकर उसपर बैठ जाया करते थे. [صحيح بُخارى : 827 ، سُنن ابى داوٗد : 730]

㉑ रसूलल्लाह ﷺ जल्से में ये दुआ पढ़ते: رَبِّ اغْفِرْ لِيْ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ ﴿ऐ रब्ब! मुझे बक्श दे﴾ [سُنن ابى داوٗد : 874 ، سُنن نسائى : 1146 ، سُنن ابن ماجه : 897]

नोट: رَبِّ اغْفِرْ لِيْ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ के बाद ये दुआ पढ़ना भी बिल्कुल सही है: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ ﴿ ! اے اللہ ﷻ मुझे बक्श दे, और मुझ पर रहम फ़रमा, और मेरी रहनुमाई फरमा, और मुझे आफ़ियत में रख, और मुझे रिज्क अता फरमा दे [صحيح مُسلم : 6850 ، المُصنف لابن ابى شيبة : 8838 ، 266/2]

㉒ रसूलल्लाह ﷺ दूसरे सज्दे के बाद भी बैठ्ने (यानि जल्सा ही इस्तराहत) को न सिर्फ़ नमाज़ के सुकून का हिस्सा क़रार देते, बल्कि उसका हुकुम भी फ़रमाया करते: [صحيح بُخارى : 6251]

㉓ रसूलल्लाह ﷺ ताक़ रकाआतों में जल्सा ही इस्तराहत के बाद ज़मीन पर दोनों हाथ रख कर ऐतामाद करते हुए अगली रकाआत के लिए उठा करते थे. [صحيح بُخارى : 823 اور 824]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत तशहुद्" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

㉔ रसूलल्लाह ﷺ जब भी तशहुद् के लिए बैठते तो आप ﷺ अपने दोनों हाथ अपनी दोनों रानओं पर रखते कभी दायाँ हाथ दाएँ घुटने और बायाँ हाथ बाएँ घुटनें पर रखते. फिर दाएँ अँगूठे को दर्मियानी ऊँगली से मिलकर हल्का बनाते. आप ﷺ अपनी शहादत की ऊँगली को थोड़ा सा झुका देते और ऊँगली से इशारा करते हुए इसके साथ तशहुद् में दुआ करते और ऊँगली को (आहिस्ता आहिस्ता) हरकत भी देते और इसकी तरफ देखते रहते थे. [صحيح مُسلم : 1308 اور 1310، سُنن ابى داوٗد : 991 ، سُنن نسائى : 1161 ، 1162 اور 1269 ، سُنن ابن ماجه : 912]

नोट: لَا اِلٰهَ पर ऊँगली उठाना और اِلَّا اللّٰه पर रख देना किसी हदीस से साबित नहीं. इसके बरअक्स सहीह अहादीस से ये साबित हुआ के मुक़म्मल तशहुद् में हल्का बनाकर शहादत की ऊँगली मुसल्सल उठाई जाये.

㉕ रसूलल्लाह ﷺ तशहुद् में दर्ज ज़ैल दुआ को बिल्कुल कुरआन की तरह ताकीदन सिखाया करते थे.

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

﴿अल्लाह ﷻ के ही लिए में तमाम तह्फ़ी (ज़बानी इबादतें). और नमाज़ें (बद्नी इबादतें), और पाक़ चीज़े (माली इबादतें)सलाम हो ऐ नबी ﷺ! आप ﷺ पर अल्लाह ﷻ की रहमत और उसकी बरकतें हो. सलाम हो हम पर और अल्लाह ﷻ के नेक बन्दों पर. मैं गवाही देता हूँ के नहीं कोई मआबूद सिवाए अल्लाह ﷻ के और गवाही देता हूँ **मुहम्मद** ﷺ उसके बन्दे है और उसके रसूल हैं [صحيح بُخارى : 1202 ، صحيح مُسلم : 897]

㉖ रसूलल्लाह ﷺ आखरी तशहुद् में बाएँ पांव को दाएँ पांव के नीचें से निकाल कर बाएँ कूल्हें पर बैठ जाते, और दाएँ पांव का पंजा क़िबला रुख कर लेते [صحيح بُخارى : 828]

㉗ रसूलल्लाह ﷺ तशहुद् के लिए ये दरूद शरीफ़ भी सिखाया करते: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ، اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ، وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ، اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

﴿ ! اے اللہ ﷻ रहमत भेज **मुहम्मद** ﷺ पर और और आली मुहम्मद ﷺ पर जैसा की तूने रहमतें नाज़िल फरमाई इब्राहीम عليه السلام पर और आली इब्राहीम عليه السلام पर बेशक तू तारीफ़ वाला बुज़ुर्गी वाला है. اے اللہ ﷻ! बर्कतें नाज़िल फरमा **मुहम्मद** ﷺ पर और आली मुहम्मद ﷺ पर जैसा की तूने बर्कतें भेजी इब्राहीम عليه السلام पर और आली इब्राहीम عليه السلام पर बेशक तू तारीफ़ वाला बुज़ुर्गी वाला है.﴾ [صحيح بُخارى : 3370 ، صحيح مُسلم : 908]

㉘ रसूलल्लाह ﷺ तशहुद् में इस दुआ का हुकुम फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ ﴿ اے اللہ ﷻ मैं तेरी पनाह माँगता हूँ जहन्नम के अज़ाब से, और कब्र के अज़ाब से, और ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से, मसीह दज्जाल के शरीर फ़ितने से﴾ [صحيح مُسلم : 1324]

㉙ रसूलल्लाह ﷺ की अक्सर अव्कात में दुआ इन्ही अल्फाज़ में ही हुआ करती थी.

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿ اے اللہ ﷻ ऐ रब्ब हमारें ! अता फरमा हमें दुनिया में भलाई और आख़िरत में भलाई, और बचा ले हमें (दोज़ख़ की) आग के अज़ाब से.﴾ [صحيح بُخارى : 6389 ، صحيح مُسلم : 6840]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ ने इन दुआओं के अलावा भी कोई और दुआ जो कुरआन व सुन्नत से साबित हो पढ़ने की इजाज़त मरहमत फरमाई है. [صحيح بُخارى : 835 ، صحيح مُسلم : 897]

㉚ रसूलल्लाह ﷺ दुआ के बाद दाएँ और बाएँ दोनों तरफ़, इन्ही अल्फाज़ के साथ सलाम फ़ेर कर **नमाज़-ए-मुहम्मदी** ﷺ मुक़म्मल फ़रमाते थे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ﴿तुम पर सलाम और اللہ ﷻ کی रहमत हो﴾

[صحيح بُخارى : 838 ، صحيح مُسلم : 1315 ، جامع ترمذى : 295 ، سُنن ابى داوٗد : 996 ، سُنن نسائى : 1320 ، سُنن ابن ماجه : 914]

आख़री नसीहत ज़ैद ताबी ؒ का बयान है सय्यिदना हुज़ैफ़ा ؓ बिन यौमान ؓ ने एक शक्स को देखा जो नमाज़ का रकूअ और सज्दा (**नमाज़-ए-मुहम्मदी** ﷺ के मुताबिक़) मुकम्मल नहीं अदा कर रहा था तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "तूने नमाज़ पढ़ी ही नहीं और अगर तू इसी तरह पढ़ता रहा तो उसी तरीक़े पर न मरेगा जो अल्लाह ﷻ ने मुहम्मद ﷺ को सिखाया है." [صحيح بُخارى : 791]